

سُورَةُ الطَّلَاقِ

Surah 65 — At-Talaaq (Divorce) · Medinan · 12 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعَدَّتِهِنَّ
وَأَحْصُوا ۚ الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا ۚ اللَّهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تَخْرِجُوهُنَّ مِنْ ۙ بُيُوتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ
إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِفُحْشَةٍ مُبَيِّنَةٍ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ
نَفْسَهُ ۚ لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا ۚ

ऐ रसूल (मुसलमानों से कह दो) जब तुम अपनी बीवियों को तलाक़ दो तो उनकी इद्दत (पाकी) के वक्त तलाक़ दो और इद्दा का
शुमार रखो और अपने परवरदिगार खुदा से डरो और (इद्दे के अन्दर) उनके घर से उन्हें न निकालो और वह खुद भी घर से न
निकले मगर जब वह कोई सरीही बेहयाई का काम कर बैठे (तो निकाल देने में मुजायका नहीं) और ये खुदा की (मुकर्रर की हुई)
हदें हैं और जो खुदा की हदों से तजाउज़ करेगा तो उसने अपने ऊपर आप जुल्म किया तो तू नहीं जानता यायद खुदा उसके
बाद कोई बात पैदा करे (जिससे मर्द पछताए और मेल हो जाए)

2

فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَأَشْهَدُوا ۚ ذَوَىٰ
عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَأَقِيمُوا ۚ الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ۚ ذَلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ ۚ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ ۚ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ ۚ مَخْرَجًا ۚ

तो जब ये अपना इद्दा पूरा करने के करीब पहुँचे तो या तुम उन्हें उनवाने शाइस्ता से रोक लो या अच्छी तरह रूखसत ही कर
दो और (तलाक़ के वक्त) अपने लोगों में से दो आदिलों को गवाह करार दे लो और गवाहों तुम खुदा के वास्ते ठीक ठीक
गवाही देना इन बातों से उस शख्स को नसीहत की जाती है जो खुदा और रोजे आखेरत पर ईमान रखता हो और जो खुदा से
डरेगा तो खुदा उसके लिए नजात की सूरत निकाल देगा

3

وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ ۚ إِنَّ اللَّهَ بُلْغُ
أَمْرِهِ ۚ ۚ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ ۚ قَدْرًا ۚ

और उसको ऐसी जगह से रिज़क़ देगा जहाँ से वहम भी न हो और जिसने खुदा पर भरोसा किया तो वह उसके लिए काफी है
बेशक खुदा अपने काम को पूरा करके रहता है खुदा ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा मुकर्रर कर रखा है

وَأَلِّ يَسِّنَ مِنَ الْمَحِيضِ مِنْ نِسَائِكُمْ إِنْ رَأَيْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلَاثَةَ أَشْهُرٍ ۖ وَأَلِّ لَمْ
يَحِضْنَ ۚ وَأُولَئِكَ الْأَحْمَالُ أَجْلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ
لَهُ ۙ مِنْ أَمْرِهِ ۚ يُسْرًا ۚ

और जो औरतें हैज से मायूस हो चुकी अगर तुम को उनके इद्दे में शक होवे तो उनका इद्दा तीन महीने है और (अला हाज़िल क़यास) वह औरतें जिनको हैज हुआ ही नहीं और हमेला औरतों का इद्दा उनका बच्चा जनना है और जो खुदा से डरता है खुदा उसके काम में सहूलित पैदा करेगा

ذَلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنْزَلَهُ ۖ إِلَيْكُمْ ۚ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ ۚ وَيُعْظِمْ لَهُ ۖ أَجْرًا

ये खुदा का हुक्म है जो खुदा ने तुम पर नाज़िल किया है और जो खुदा डरता रहेगा तो वह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बड़ा दरजा देगा

أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِنْ وَجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا ۚ عَلَيْهِنَّ ۚ وَإِنْ
كُنَّ أُولَىٰ حَمْلٍ ۚ فَأَنْفِقُوا ۚ عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ
فَأَتُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ ۚ وَأَتَمِّرُوا ۚ بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَإِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسْتَزْعِ ۖ لَهُ ۖ
أُخْرَىٰ

मुतलक्का औरतों को (इद्दे तक) अपने मक़दूर मुताबिक दे रखो जहाँ तुम खुद रहते हो और उनको तंग करने के लिए उनको तकलीफ न पहुँचाओ और अगर वह हमेला हो तो बच्चा जनने तक उनका खर्च देते रहो फिर (जनने के बाद) अगर वह बच्चे को तुम्हारी खातिर दूध पिलाए तो उन्हें उनकी (मुनासिब) उजरत दे दो और बाहम सलाहियत से दस्तूर के मुताबिक बात चीत करो और अगर तुम बाहम कश म कश करो तो बच्चे को उसके (बाप की) खातिर से कोई और औरत दूध पिला देगी

لِيُنْفِقَ ذُو سَعَةٍ ۚ مِنْ سَعَتِهِ ۚ ۚ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ ۖ فَلْيُنْفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ ۚ لَا
يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا ۚ سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ ۖ يُسْرًا ۚ

गुन्जाइश वाले को अपनी गुन्जाइश के मुताबिक खर्च करना चाहिए और जिसकी रोज़ी तंग हो वह जितना खुदा ने उसे दिया है उसमें से खर्च करे खुदा ने जिसको जितना दिया है बस उसी के मुताबिक तकलीफ़ दिया करता है खुदा अनकरीब ही तंगी के बाद फ़राखी अता करेगा

8

وَكَايِن مِّن قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ ۚ فَحَاسَبْنَاهَا حِسَابًا شَدِيدًا ۚ وَعَذَّبْنَاهَا عَذَابًا نُّكَرًا ۚ

और बहुत सी बस्तियों (वाले) ने अपने परवरदिगार और उसके रसूलों के हुक्म से सरकशी की तो हमने उनका बड़ी सख्ती से हिसाब लिया और उन्हें बुरे अज़ाब की सज़ा दी

9

فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عُقَبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا

तो उन्होंने अपने काम की सज़ा का मज़ा चख लिया और उनके काम का अन्जाम घाटा ही था

10

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِيَ الْأَلْبَابِ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ قَدْ أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۚ

खुदा ने उनके लिए सख्त अज़ाब तैयार कर रखा है तो ऐ अक्लमन्दों जो ईमान ला चुके हो खुदा से डरते रहो खुदा ने तुम्हारे पास (अपनी) याद कुरान और अपना रसूल भेज दिया है

11

رَسُولًا ۚ يَتْلُوا عَلَيْكُمْ ءَايَاتِ اللَّهِ مُبَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَمَنْ يُؤْمِن بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا ۚ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا

जो तुम्हारे सामने बाज़े आये पढ़ता है ताकि जो लोग ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम करते रहे उनको (कुफ़र की) तारिकियों से ईमान की रौशनी की तरफ़ निकाल लाए और जो खुदा पर ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम करे तो खुदा उसको (बेहिश्त के) उन बाग़ों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं और वह उसमें अबादुल आबाद तक रहेंगे खुदा ने उनको अच्छी अच्छी रोज़ी दी है

12

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَوَاتٍ ۚ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوا ۚ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ

खुदा ही तो है जिसने सात आसमान पैदा किए और उन्हीं के बराबर ज़मीन को भी उनमें खुदा का हुक्म नाज़िल होता रहता है - ताकि तुम लोग जान लो कि खुदा हर चीज़ पर कादिर है और बेशक खुदा अपने इल्म से हर चीज़ पर हावी है

